अगस्त २०१६

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

नम्रता

संपादकीय

बालमित्रों,

"नमे ते सौने गमे।" (नम्र व्यक्ति सब को अच्छा लगता है) इस कहावत को हम बचपन से ही सुनते आ रहे हैं। लेकिन नम्रता यानी क्या? क्या हम सचमुच इस कहावत का मतलब समझते हैं? यदि हाँ, तो हम इस अंक को पढ़कर तुलना कर सकते हैं कि हमारा समझा हुआ कितना प्रमाणिक है? और यदि नहीं समझ में आया है तो इस अंक को पढ़कर समझ लीजिए।

परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में "नम्रता किसे कहते हैं", उसके लक्षण आदि के बारे में बताया है। तो आइए, हम भी इस अंक को पढ़कर "नम्रता" की ओर बढ़ें।

- डिम्पल मेहता

नम्रता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक: ५
अखंड क्रमांक: ४१
अगस्त २०१६

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपयें
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

दादाजी कहते हैं...

नम्र अर्थात् क्या, सामनेवाला थोड़ा झुके, उससे पहले ही खुद पूरा झुक जाए। कोई उसके साथ अकड़ रखे फिर भी वह झुके। वर्ना तो मनुष्य का स्वभाव कैसा है? सामनेवाला अकड़ दिखाए तो वह भी अकड़ दिखाता है लेकिन यदि वहाँ भी झुके तो वह मोक्ष में जाने की निशानी कही जाएगी।

हमसे कोई कहे, "दादा, इन सभी के पैर छुओ।" तो मैं सभी के ५-५ बार पैर छूकर आ जाऊँ! हम तो नौकर के भी पैर छू लेंगे। यानी नम्रता होनी चाहिए। जो इस तरह नम्र हो जाएगा उनका तो कल्याण हो जाएगा।

यह अहंकार सब से बड़ी कमज़ोरी है। आप कितने भी प्रतिभाशाली क्यों न हों लेकिन आप में नम्रता होनी चाहिए। इगोइज़म अर्थात् जो छलक जाता है। जो छलक जाता है वह यूज़लेस है! अहंकार तो अधूरापन है।

यदि मेरे बोलने से सामनेवाला उग्र हो जाए तो मैं तुरंत समझ जाता हूँ कि "मेरी गलती है"। १०० प्रतिशत गलत है, फिर मैं ऐसा नहीं कहूँगा कि "उसे समझ नहीं है, इसलिए उग्र हो रहा है।" मेरी ही गलती है।

कोई हमें हमारी भूल बताए तो हम तुरंत ही स्वीकार कर लेंगे। कोई कहे कि, "यह तुम्हारी भूल है" तो हम कहेंगे कि, "हाँ भाई, तुमने हमें भूल बताई, तुम्हारा बहुत उपकार।" हमें तो पता है कि जो भूल हमें नहीं दिखाई देती, उसे उन्होंने दिखा दिया इसलिए उनका उपकार है।

यह तो नई ही बात!

अहंकारी कैसे झुक सकता है? "अब मैं नहीं झुकूँगा", वह फिर एक तरह की कमज़ोरी है।

उच्च कुल हो और उसका अहंकार करे तो निम्न कुल में जन्म होता है, और अगली बार निम्न कुल में रहते हुए नम्रता रखे तो उच्च कुल में जन्म होगा।

गुणवान कब कहा जाएगा कि जब उसमें भरपूर नम्रता हो।

रौब दिखाने की
जगह पर भी नम्रता
दिखाए, उसे
खानदानी कहते हैं।
जितनी ज्यादा
नम्रता उतनी ही
ज्यादा खानदानी।

जैसे-जैसे इंसान ऊँचाई छूता जाता है, वैसे-वैसे नम्र होता जाता है, उसमें अकड़ नहीं होती। अकड़ तो हल्के लोगों में होती है।

नम्रता

"नम्र व्यक्ति सब को अच्छा लगता है", इसका क्या मतलब है दादी?" स्कूल से आकर खुशी दौड़ती-दौड़ती सीधी दादी के रूम में गई। स्कूल बैग रखकर बोली, "कल मुझे क्लास में इस विषय पर बोलना है।"

किताब से ध्यान हटाकर दादी ने खुशी की तरफ देखा।

खुशी बोली, "छोटे बड़ों के पैर छूते हैं, उसी को नम्रता कहते हैं न?"

दादी हँसकर बोली, "इतना ही नहीं, नम्रता इससे बहुत आगे की बात है। सिर्फ छोटों के लिए ही नहीं बल्कि बड़ों के लिए भी अनिवार्य सर्वश्रेष्ठ गुण है। समग्र शक्तिशाली और समर्थ पुरुष में यह गुण होता ही है।"

"ज्यादा शक्तिशाली व्यक्ति में यह गुण ज्यादा होता है?" खुशी को सुनकर आश्चर्य हुआ।

दादी किताब बंद करके, आँखों से लगाकर एक तरफ रखते हुए बोलीं, "नम्रता के बिना तो बाकी सभी गुण बेकार हैं। नम्रता का एक ही गुण इंसान को उत्तम बना देता है, वाणी और वर्तन में मिठास भर देता है। अनेकों बार शक्ति और सामर्थ्य होते हुए भी नम्रता दिखाने से कठोर से कठोर दिल भी जीता जा सकता है, संघर्ष टाला जा सकता

"इतना ही नहीं, नम्रता इससे बहुत आगे की बात है। सिर्फ छोटों के लिए ही नहीं बल्कि बड़ों के लिए भी अनिवार्य सर्वश्रेष्ठ गुण है।

है। जिस तरह एक प्यासे व्यक्ति के सामने विशाल नमकीन सागर हो फिर भी वह बेकार है। उसके लिए तो एक लोटा मीठा पानी ही ज्यादा कीमती है।"

खुशी पालथी लगाकर दादी के पास बैठ गई। दादी ने कहा, "यदि सामनेवाला अकड़ दिखाए तो भी हमें नम्रता से ही व्यवहार करना चाहिए। वह थोड़ा झुके, उससे पहले हमें पूरा झुक जाना चाहिए। जैसे जिस डाली पर फल लगे होते हैं, वह झुक जाती है वैसे ही मनुष्य में भी जैसे-जैसे ज्यादा काबिलीयत आती जाती है, वैसे-वैसे उसमें नम्रता भी बढ़ती जानी चाहिए।"

"ओहो दादी, आप तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहीं है। मुझे समझ में आए इस तरह बताइए न", खुशी सिर खुजलाते हुए बोली।

"ठीक है... तुम्हें हनुमान जी की एक कहानी सुनाती हूँ।" कुछ सोचते हुए दादी ने कहा, "सुन...

एक बार हनुमान जी सीता जी की खोज में समुद्र के पार लंका की तरफ जा रहे थे। समुद्र के मध्य में से एक भयंकर विशालकाय सुरसा नामक राक्षसी प्रकट हुई। उन्हें रोकते हुए बोली, "तू कौन है, मूर्ख? रुक जा। यह मेरा प्रदेश है - सुरसा प्रदेश। यहाँ से कोई मेरी अनुमति के बिना पार नहीं जा सकता। यदि वह जाए तो सिर्फ मेरे मुख में। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे प्रदेश से कोई भी प्राणी, पक्षी या मछली जीवित नहीं जा सकते।"

हनुमान जी रुके और दोनों हाथ जोड़कर अत्यंत नम्रता से अपना परिचय दिया, "प्रणाम माता, मैं पवन पुत्र हनुमान, प्रभु श्री राम का परम भक्त और सेवक हूँ। सीता मैया की खोज में मैं भी अपना योगदान दे रहा हूँ। उनका हरण हो गया है और ऐसे समाचार मिले हैं कि वे लंका में हैं। इसलिए लंका जा रहा हूँ। लंका जाने के लिए यही एक मात्र मार्ग

है। आपके प्रदेश से, आपकी अनुमति के बिना निकलने के लिए क्षमा माँगता हूँ। आपका अनादर करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। माता, कृपा करके मुझे अनुमति दीजिए।"

सुरसा और ज्यादा अकड़कर ज़ोर से बोली, "मैं इनमें से किसी को नहीं जानती। तेरे और तेरे प्रभु श्री राम के विषय में जानने की मुझे कोई रुचि भी नहीं है। तुझे तो बस मेरे मुख में ही जाना पड़ेगा। तेरा एक मात्र मार्ग मेरे मुख में ही जाता है। इसमें से यदि तुम जीवित बाहर निकल पाओगे तभी कहीं और जा सकोगे। सावधान!, तुच्छ वानर।"

हनुमान जी तो अत्यंत शक्तिशाली थे। यदि वे चाहते तो एक क्षण में ही सुरसा को परास्त करके आगे बढ़ सकते थे, लेकिन वे अत्यंत गुणवान भी थे। विनम्रता कभी नहीं छोड़ते थे।

फिर से उन्होंने और ज्यादा नम्र होकर विनती की, "माता, मैं खुशी-खुशी आपके मुख में प्रवेश कर जाता लेकिन अभी तो प्रभु के कार्य में यदि मृत्यु भी रुकावट बनकर आएगी, तो उसे भी मैं स्वीकार नहीं कर पाऊँगा। एक बार प्रभु का कार्य जो हाथ में लिया है, वह पूरा हो जाए फिर खुशी से मुझे खा लेना। मैं खुद आपके सामने हाज़िर हो जाऊँगा। वचन देता हूँ। माता, अभी मैं आप से सादर विनती करता हूँ कि, "मुझे कृपा करके लंका जाने की अनुमति दीजिए।"

सुरसा को हनुमान जी की नम्रता देखकर आश्चर्य हुआ, फिर भी उसने अकड़ नहीं छोड़ी, "किसी भी प्राणी के लिए या किसी भी कारण से मेरा नियम नहीं टूटेगा। तुझे मेरे मुख में प्रवेश करना ही पड़ेगा।"

ऐसा कहकर सुरसा ने अपना आकार बढ़ा लिया और मुँह खोला।

हनुमान जी को लगा कि यहाँ विनती चलनेवाली नहीं है और अविवेक या अनादर उन्हें करना नहीं था। थोड़ा सोचकर वह बोले, "ठीक है माता, यदि आप ऐसा चाहती हो तो ठीक है। मैं आपके मुख में प्रवेश करता हूँ।"

ऐसा कहकर वे एकदम छोटे होने लगे। हनुमान जी ने अपना कद एक मच्छर के बराबर कर लिया। फिर उन्होंने सुरसा के मुख में प्रवेश किया।

तब सुरसा अपना मुख बंद करने लगी। हनुमान जी झट से बाहर आ गए और सुरसा का मुँह बंद हो गया। फिर से अपने मूल कद में आकर अत्यंत आदर भाव से बोले, "माता, आपकी इच्छा पूरी हो गई। आपका मान रखने के लिए मैंने बिल्कुल आपके कहे अनुसार आपके मुख में प्रवेश किया। अब मुझे मेहरबानी करके मेरे प्रभु का कार्य पूर्ण करने जाने की अनुमति दीजिए।"

इस बार सुरसा की सारी अकड़ खत्म हो गई और वह तृप्त हो गई। मुस्कराते हुए बोली, "वत्स, तेरी नम्रता ने मेरा मन जीत लिया। तुम खुशी से जाओ और मेरा आशीर्वाद भी लेते जाओ। तेरे जैसा भक्त पाकर तो भगवान भी धन्य हो गए। जा, तुझे तेरे प्रयत्नों में पूरी सफलता मिलेगी। विजयी भव।"

हनुमान जी ने अपना कद एक मच्छर के बराबर कर लिया। फिर उन्होंने सुरसा के मुख में प्रवेश किया।

"देखा खुशी, नम्रता कितनी ज्यादा असरकारक होती है?" दादी ने कहानी समाप्त करते हुए खुशी की तरफ देखा। खुशी के चेहरे पर भी मुस्कराहट आ गई।

अब दादी ने आगे समझाते हुए कहा, "बड़े-बड़े ताड़ के पेड़, छोटे नाजुक घास के तिनकों के सामने रौब दिखाते हुए तनकर खड़े रहते हैं। लेकिन जब ज़ोरदार आँधी - तूफान आता है, तब तनकर खड़े हुए पेड़ गिर जाते हैं और हमेशा झुककर रहनेवाले घास के तिनके वैसे ही रहते हैं। अब समझ में आया बेटा?" खुशी के गाल को थपथपाते हुए दादी ने पूछा।

"अब तो पक्का समझ गई दादी", और खुशी दादी को प्यार से गले लगाकर भाग गई।

दूसरे दिन क्लास टीचर ने सभी से पूछा, "नम्रता के विषय पर कौन तैयारी करके आया है? जो सब से अच्छा बोलेगा उसे आज का स्टार स्टूडन्ट स्टिकर मिलेगा।"

कई बच्चों ने हाथ ऊँचे किए। खुशी उत्साह में आकर खड़ी हो गई और बोली, "टीचर... मैं बोलूँ?"

तभी उसके पास बैठी हुई निशा मुँह बिगाड़कर बोली, "नहीं खुशी, मैंने तुझसे पहले हाथ ऊँचा किया है। और वैसे भी मैं तुझ से ज्यादा होशियार हूँ इसलिए मुझे पहले चान्स मिलना चाहिए।"

टीचर कुछ कहें उससे पहले ही खुशी ने हाथ नीचे कर लिया और बोली, "ओ.के. निशा, तू पहले बोल। तू मेरी फ्रेन्ड है। तू स्टिकर जीतेगी तो भी मुझे उतना ही अच्छा लगेगा। मुझे कोई हर्ज नहीं है।"

टीचर ने आश्चर्य के साथ निशा को बोलने के लिए कहा। बारी-बारी से सभी बोले।

अंत में टीचर ने स्टिकर खुशी को देते हुए कहा, "सभी ने तो नम्रता की सिर्फ बातें की लेकिन तुमने तो सचमुच नम्रता को गुण समझकर अपना भी लिया। शाबाश खुशी। मुझे तुझ पर गर्व है।"

यह सुनकर निशा को भी अपनी गलती समझ में आ गई। उसे खुशी के लिए गौरव अनुभव हुआ और सब से पहले तालियाँ बजाना उसी ने शुरू किया और क्लास तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

पहले कौन?

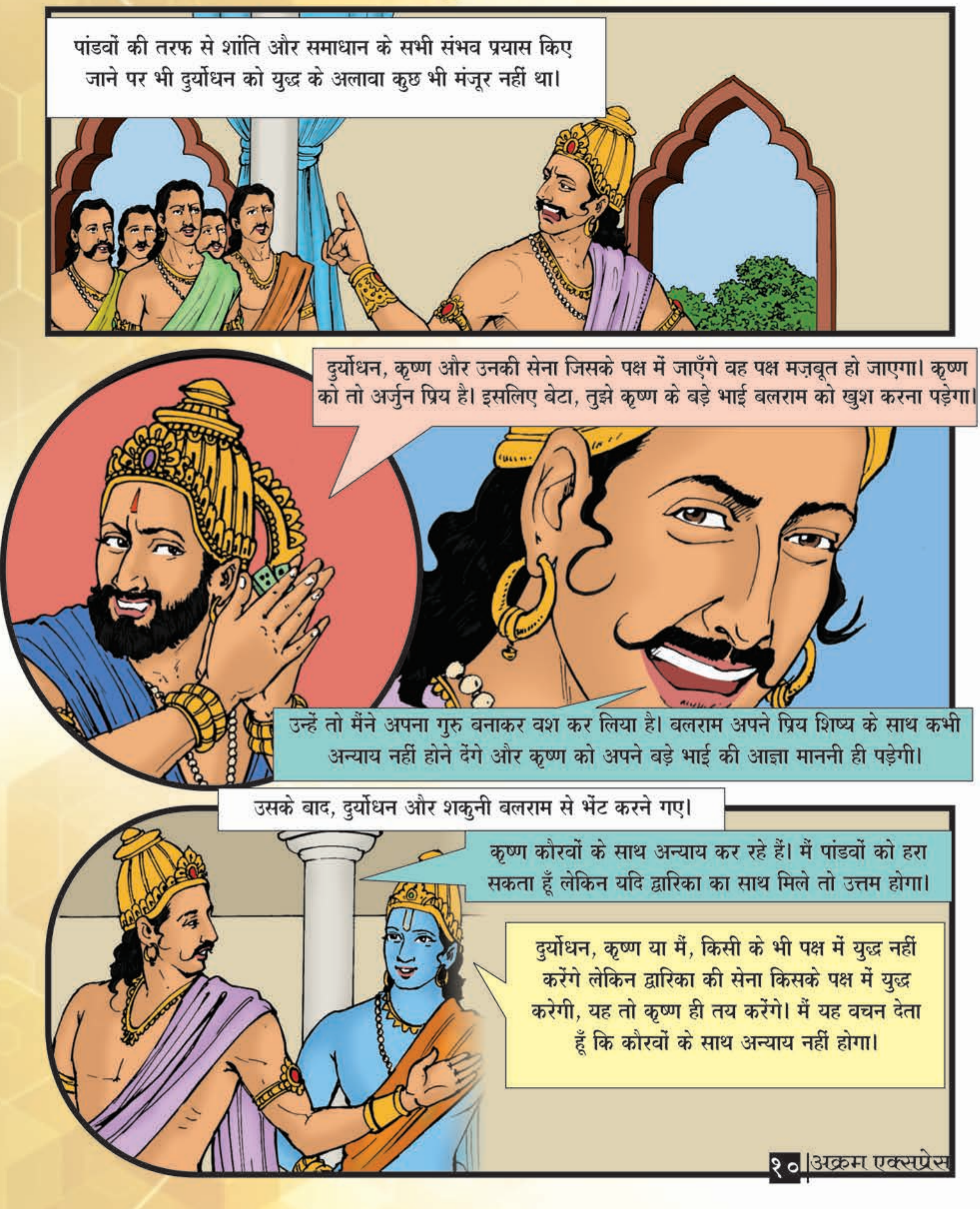
पांडवों की तरफ से शांति और समाधान के सभी संभव प्रयास किए जाने पर भी दुर्योधन को युद्ध के अलावा कुछ भी मंजूर नहीं था।
दुर्योधन, कृष्ण और उनकी सेना जिसके पक्ष में जाएँगे वह पक्ष मज़बूत हो जाएगा। कृष्ण को तो अर्जुन प्रिय है। इसलिए बेटा, तुझे कृष्ण के बड़े भाई बलराम को खुश करना पड़ेगा।
उन्हें तो मैंने अपना गुरु बनाकर वश कर लिया है। बलराम अपने प्रिय शिष्य के साथ कभी अन्याय नहीं होने देंगे और कृष्ण को अपने बड़े भाई की आज्ञा माननी ही पड़ेगी।
उसके बाद, दुर्योधन और शकुनी बलराम से भेंट करने गए।
कृष्ण कौरवों के साथ अन्याय कर रहे हैं। मैं पांडवों को हरा सकता हूँ लेकिन यदि द्वारिका का साथ मिले तो उत्तम होगा।
दुर्योधन, कृष्ण या मैं, किसी के भी पक्ष में युद्ध नहीं करेंगे लेकिन द्वारिका की सेना किसके पक्ष में युद्ध करेगी, यह तो कृष्ण ही तय करेंगे। मैं यह वचन देता हूँ कि कौरवों के साथ अन्याय नहीं होगा।

यह बात श्री कृष्ण ने सुनी।
बड़े भाई का वचन ही मेरा वचन है। कल सुबह दुर्योधन और अर्जुन में से जो पहले मुझसे मिलेगा मैं उसकी माँग पूरी करूँगा।
अर्जुन को कृष्ण का यह संदेश दे दिया गया। दूसरे दिन जब श्री कृष्ण सो रहे थे, तब दुर्योधन उनके कक्ष में पहुँच गया।
पहले मैं आया हूँ, इसलिए कृष्ण को मेरी माँग पहले पूरी करनी पड़ेगी।
श्री कृष्ण के पलंग के पास दो दीवान थे। एक सिर की तरफ और दूसरा पैर की तरफ।
सब से शक्तिशाली कुरु राष्ट्र का युवराज, मैं खड़ा होकर इंतज़ार क्यों करूँ? मेरे लिए ही तो ये आसन है। पैरों की तरफ बैठना मुझे शोभा नहीं देता। ऐसा सोचकर दुर्योधन सिर के पासवाले दीवान पर बैठ गया।

उसके बाद, अर्जुन श्री कृष्ण के कक्ष में आए। कृष्ण के पैरों के पास खड़े होकर, दोनों हाथ जोड़कर, वे श्री कृष्ण को निहारने लगे। तभी कृष्ण की आँखें खुली।
पार्थ! तुम कब से दोनों हाथ जोड़कर मेरे पैरों के पास खड़े हो?
प्रणाम माधव! विनती लेकर आया हूँ। मेरी प्रार्थना है कि...
अर्जुन का वाक्य दुर्योधन ने बीच में ही काट दिया।
अर्जुन! मैं तुमसे पहले आया हूँ। तुम्हारी नहीं, मेरी माँग पहले पूरी होनी चाहिए।
भाई दुर्योधन! तुम भी हो? मैंने तो तुम्हें देखा ही नहीं।
हाँ! अर्जुन तो मुझसे बाद में आया है। तो आपको पहला अवसर इसे नहीं, मुझे ही देना पड़ेगा।
सही बात है। लेकिन मैंने कहा था कि जो मुझसे पहले मिलेगा उसकी माँग मैं पूरी करूँगा। मुझे पहले अर्जुन दिखा फिर तुम। तो न्याय की दृष्टि से मुझे अर्जुन को ही पहला अवसर देना चाहिए।

भाई दुर्योधन मुझसे पहले आए थे। प्रभु, इन्हें यदि पहले अवसर मिलेगा, तो मुझे ज़रा भी हर्ज नहीं है।
बड़े भाई बलराम को दिए गए वचन के अनुसार मैं युद्ध नहीं करूँगा। बोलो दुर्योधन, तुम्हें क्या चाहिए, मैं या मेरी सेना?
निःशस्त्र कृष्ण को लेकर मैं क्या करूँगा? इनकी सेना लूँगा तो मेरी शक्ति बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी।
मुझे आपकी सेना चाहिए।
ठीक है। मेरी सेना तुम्हारे पक्ष में युद्ध करेगी।
छाती फुलाकर दुर्योधन ने अर्जुन को देखा और कक्ष से बाहर चला गया।
माधव, मेरी तो यही प्रार्थना थी कि आप मेरा हाथ पकड़ लीजिए। मुझे तो आपकी कृपा और मार्गदर्शन की ही ज़रूरत है। आपके साथ के बिना मैं शक्तिहीन और दिशाहीन हूँ।
पार्थ! तुम्हारी नम्रता ने मुझे तुम्हारा सारथी बनने के लिए मज़बूर कर दिया है। मैं कुरुक्षेत्र में हर पल तुम्हारे साथ रहूँगा। कदम-कदम पर तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा। धर्म की विजय निश्चित है।
और फिर क्या हुआ यह तो सभी जानते हैं।श्री कृष्ण की छत्रछाया में रहकर पांडवों ने कौरवों को महाभारत के युद्ध में पराजित करके, धर्म राज्य की पुनः स्थापना की। देखा, कृपा तो नम्रता और विनय से प्राप्त होती है, अकड़ से नहीं।

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

सोरठ के वंथली गाँव में एक बड़े व्यापारी रहते थे। उनका नाम सवचंद था। व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था। विदेशों से माल आता-जाता था और उसे जहाज़ों में भर-भरकर भेजते थे।

एक बार उनके १२ जहाज़ माल लेकर विदेश से आ रहे थे। बहुत समय हो गया लेकिन जहाज़ वापस नहीं आए। सेठ ने दो-चार दिन तो ऐसे ही इंतज़ार किया। उसके बाद एक सप्ताह और निकल गया। लेकिन न तो जहाज़ वापस आए, न ही उनका कोई समाचार मिला।

सवचंद सेठ तो बहुत मुश्किल में आ गए। गाँव में चर्चा होने लगी। सेठ के सभी जहाज़ डूब गए हैं। अब तो सेठ का दिवाला निकलेगा। जिस-जिस की धनराशि सेठ के पास थी, वे वसूली के लिए आने लगे। जब तक सेठ जी के पास धन था तब तक तो वे सब को देते गए। अब बाकी कुछ नहीं बचा।

मांगरोळ गाँव के ठाकुर, जिनकी सवचंद सेठ के साथ अच्छी दोस्ती थी, उनके एक लाख रुपये सेठ के पास जमा थे। ठाकुर के बेटे ने उनसे कहा, "जल्दी जाकर सवचंद सेठ से अपनी धनराशि ले आओ। सेठ फिर नहीं देंगे।"

ठाकुर को भी शंका हुई। घोड़ी पर सवार होकर सवचंद सेठ के पास पहुँचे। और वसूली करने के लिए कहा, "मेरे बेटे को विदेश जाना है। सारा धन तुरंत दे दो।"

सेठ ज़रा घबरा गए। जो रकम जमा थी वह तो देनी ही पड़ेगी। सेठ ने नम्रतापूर्वक ठाकुर से कहा, "भाई, रकम बड़ी है, व्यवस्था करने में दो-तीन दिन लग जाएँगे।"

ठाकुर ने कहा, "यदि मैं खाली हाथ वापस गया तो मेरा पुत्र मेरे साथ झगड़ा करेगा और हमारे बीच

बेकार में ही बैर बंधेगा।"

सेठ समझ गए। गिरते को गिरानेवाले बहुत होते हैं। ठाकुर के साथ बैर तो ठीक नहीं है। उधार है यह तो सच है, देना ही है। क्या करूँ? रास्ता तो निकालना ही पड़ेगा।

सोचते-सोचते उन्हें एक रास्ता सूझा। अहमदाबाद में सोमचंद नाम के एक बड़े व्यापारी रहते थे। वे बहुत ही इज्जतवाले और मान-व्यवहार सँभालनेवाले थे। लेकिन सवचंद सेठ का उनके साथ कोई लेन-देन का व्यवहार नहीं था। सिर्फ नाम ही जानते थे। उनके ऊपर हुंडी लिखने का सोचा और ठाकुर से कहा, "अगर जल्दी चाहिए तो अहमदाबाद जाओ, मैं हुंडी लिख देता हूँ, उसे दिखाकर अपनी रकम ले लेना।"

ठाकुर ने कहा ठीक है। लिख दो। सवचंद सेठ ने नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए कलम उठाई और वैसी ही हुंडी लिख दी, जैसी नरसिंह मेहता ने शामण गिरधारी सेठ के लिए लिखी थी।

सेठ ने लिख तो दी लेकिन वे सोचने लगे, "न तो सोमचंद सेठ के साथ हमारी कोई पहचान, न ही कोई पैसे का व्यवहार। ऐसे में सेठ लाख रुपये की हुंडी कैसे स्वीकार करेंगे?"

सेठ की छाती भारी हो गई। आँखों में आँसू आ गए और दो बूंदें हुंडी पर भी गिर गईं। जहाँ आँसू गिरे वहाँ के अक्षर भीगकर थोड़े फैल गए। भगवान का स्मरण करके हुंडी ठाकुर को दे दी।

ठाकुर तो तुरंत ही घोड़ी द्वारा अहमदाबाद पहुँच गए। सेठ की मशहूर पीढ़ी ढूँढने में देर नहीं लगी। "सोमचंद अमीचंद सेठ की पीढ़ी" ढूँढ निकाली और उनकी गद्दी के पास जाकर हुंडी दिखाई।

सेठ जी सोच में पड़ गए। सवचंद जैराम नाम का ऐसा कोई खाता उनके ख्याल में नहीं था। "यह किसकी हुंडी होगी? लिखनेवाला कौन होगा?"

सेठ ने मुनीम से पूछा, "वंथली के सवचंद सेठ का खाता है? देखो।"

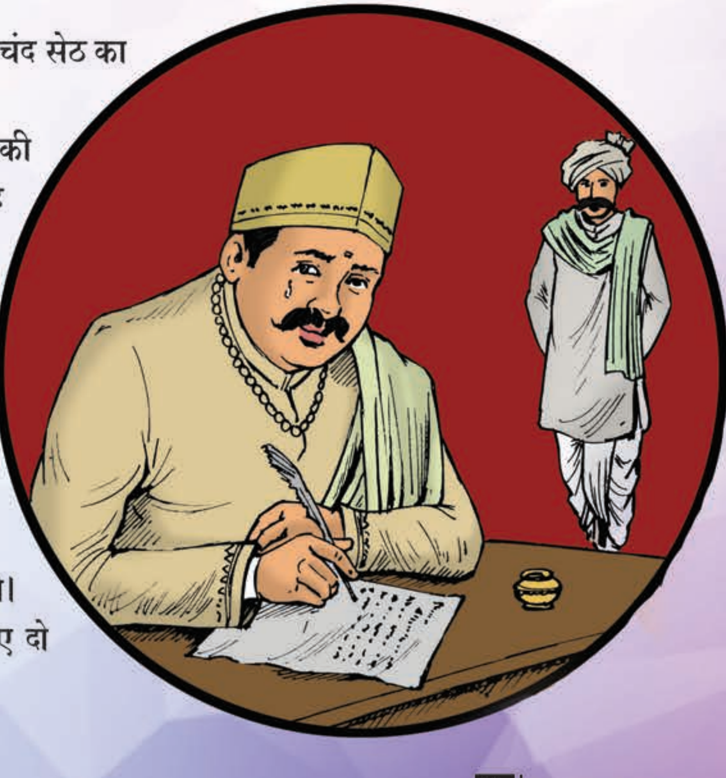

मुनीम के पास ऐसे किसी नाम की जानकारी नहीं थी लेकिन सेठ ने पूछा है इसलिए खातों को ठीक से जाँचकर आधे घंटे बाद सेठ जी को अकेले में बुलाकर कहा,

"नहीं सेठ जी! सवचंद नाम का कोई खाता नहीं है। कोई व्यवहार भी अपने साथ नहीं है। यह किसी अपरिचित व्यक्ति की हुंडी है।"

सेठ ने हुंडी हाथ में ली। दो-तीन बार पढ़ी। अचानक उनका ध्यान कागज़ पर गिरे हुए दो आँसुओंवाले अक्षरों पर गया।

मूल जैन बनिये। हृदय में जैन सधर्मी के प्रति भावुकता जागी। मन ही मन वस्तुस्थिति समझ गए। ठाकुर को २-३ दिन ठहरने के लिए कहा और उसे भी परखा कि, कहीं कोई धूर्त तो नहीं है। परखने पर पता चला कि ठाकुर इंसान तो इज्जतदार हैं, वे धूर्त नहीं हो सकते।

सेठ ने ठाकुर को दो दिन घर में ठहराया। दो दिन तक सब जाँच-पड़ताल करने के बाद तीसरे दिन पीढ़ी पर बुलाकर मुनीम को आज्ञा दी कि, "हुंडी के अनुसार एक लाख की नगद रकम ठाकुर को दे दें।"

मुनीम ने इशारा करते हुए कहा, "ऐसा कोई खाता नहीं है। पैसे कैसे दिए जाएँ? किसके खाते में लिख दूँ?" सेठ ने कहा, "खर्च के खाते में लिख दो।"

मन ही मन बड़बड़ाते हुए उसने एक लाख रुपये ठाकुर को गिनकर दे दिए।

ठाकुर को रकम मिल गई इसलिए वह खुशी-खुशी वंथली वापस आ गए।

बाकी अगले अंक में

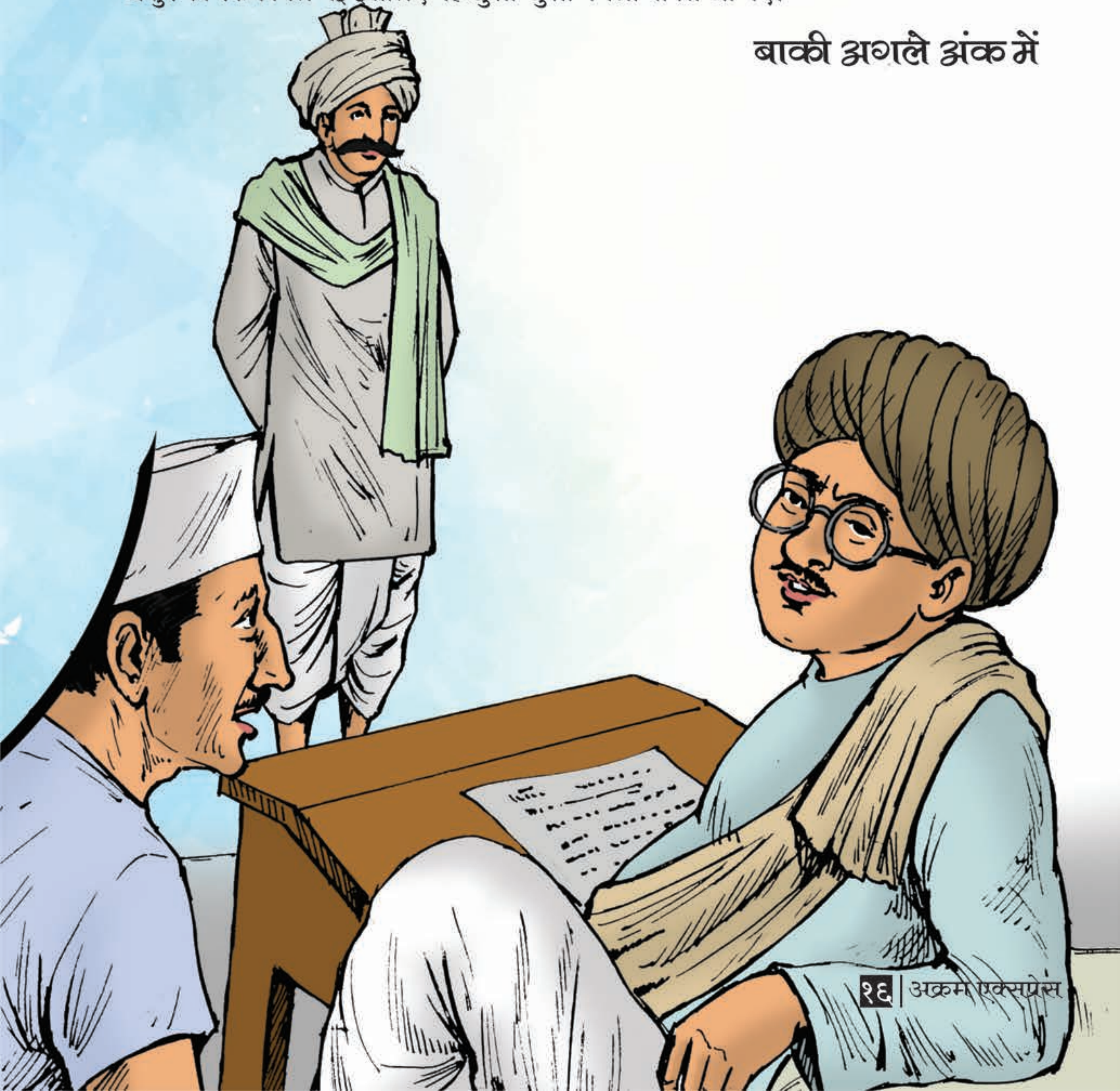

मीठी यादें

अड़ालज मंदिर की प्रतिष्ठा के समय का यह अवसर है। एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया था, और उसकी ज़िम्मेदारी एक ब्रह्मचारी भाई को दी गई थी। तकरीबन २००-३०० मीटर जितनी शोभायात्रा आगे बढ़ी होगी, वहाँ आर.टी.ओ. के पास एक स्टॉप था। जहाँ सभी को गरबा करना था। वहीं नीरू माँ के लिए स्टेज बनाया गया था। उस स्टेज के आसपास रस्सी से तीन सर्कल बनाए थे। उसमें पहले दो सर्कल खाली थे और उसके बाद के सर्कल में गरबा करना था।

जब नीरू माँ स्टेज पर आए, तब उन्होंने देखा कि सभी महात्मा इतने दूर थे कि उनसे बातचीत तो दूर उन्हें देखने-पहचानने में भी परेशानी हो जाए। उसी समय वहाँ से वह ब्रह्मचारी भाई बाईक लेकर जा रहे थे तुरंत नीरू माँ ने उसे बुलाया। और नीरू माँ स्टेज से नीचे उतरकर उसकी बाईक पर पीछे बैठ गए। और सारे सर्कल में नीरू माँ ने बाईक पर बैठकर गरबे घूमते सभी महात्माओं को दर्शन दिए। सारे महात्मा आनंद में आ गए।

बाद में उन्होंने उस भाई को कहा कि, "इस तरह का आयोजन कभी भी नहीं करना, महात्मा तो मेरे दिल के टुकड़े हैं, उनसे दूर किस तरह रह सकेंगे!"

नीरू माँ को महात्मा बहुत प्यारे हैं, अतः कोई उन्हें महात्माओं से दूर रखे तो उन्हें ज़रा भी अच्छा नहीं लगता। और महात्मा भी उनसे दूर नहीं रह पाते, इस प्रेम को वह अच्छी तरह से समझते थे।

नीरू माँ तो नीरू माँ हैं!

जीवंत उदाहरण

दमास्कस नामक शहर में एक वृद्ध रहता था। "झाविया" नामक सूफी लॉज (सूफी संतों का आश्रय स्थल) पर वह रोज़ पत्थर फेंकता था।

जब भी वह वृद्ध, झाविया पर पत्थर फेंकता, तब झाविया में रहनेवाले सूफी गुरु अब्दअर रहमान अपने शिष्य सीदी (जिनका पूरा नाम मुहंमद सईद अल जमाल अर रफाई था) से कहते, "इस वृद्ध पर करुणा रखना। इसे भोजन चाहिए तो भोजन देना। इसे जो चाहिए वह देना।"

सीदी अपने गुरु की आज्ञा अनुसार उस वृद्ध को सभी सुविधाएँ देते लेकिन फिर भी वह वृद्ध अपने पुत्रों को एकत्रित कर, झाविया पर और ज्यादा पत्थर फेंकता।

सीदी को कई बार आश्चर्य होता, "जो इंसान हमारे घर पर इस तरह पत्थर फेंकता हो, उसे सभी सुविधाएँ देने में क्या समझदारी है?" लेकिन फिर भी गुरु के कहे अनुसार सीदी, वृद्ध को कपड़ा, खाना, पैसा आदि देते। सीदी की उलझन दूर करने के लिए, गुरु ने उसे कहा, "इस वृद्ध के पत्थर फेंकने के पीछे बहुत से संदेश हैं।"

एक दिन वृद्ध बीमार

हो गया। गुरु ने अपने शिष्य सीदी को उसके पास भेजा।

"कौन है?", वृद्ध ने पूछा।

सीदी ने जब अपना परिचय दिया, तब उस वृद्ध की आँखों से अविरत आँसुओं की धारा बहने लगी। रोते-रोते उसने दिल से अपने कर्मों की अल्लाह से क्षमा माँगी।

रोते-रोते उसने दिल से अपने कर्मों की अल्लाह से क्षमा माँगी।

उसके थोड़े दिनों के बाद ही वह वृद्ध झाविया में रहने आ गया और गुरु अब्दअर रहमान का शिष्य बन गया।

वर्षों बाद, एक दिन सीदी उस वृद्ध से जॉर्डन में मिले। उस समय उस वृद्ध की आयु १०५ साल की थी। वृद्ध ने सीदी से माफी माँगी, "सीदी, झाविया पर पत्थर फेंकने के लिए मुझे माफ करना। लेकिन आज मुझे ऐसा लगता है यदि मैंने ऐसा नहीं किया होता, तो मैं भगवान तक पहुँच नहीं पाता। गुरु का आशय समझ नहीं पाता।"

वृद्ध की इस बात से सीदी को अपने गुरु का संदेश समझ में आया।

इस घटना को सीदी ने अपनी एक पुस्तक में एक खजूर के वृक्ष के चित्र के साथ दिखाया है। इस चित्र के पीछे सीदी का संदेश है कि, "खजूर के वृक्ष की तरह बनो। खजूर के वृक्ष की तरफ तुम कुछ भी फेंको, लेकिन बदले में तो वह तुम्हें मीठे खजूर ही देता है।"

बालमित्रों, कितना सुंदर संदेश है! वृद्ध के असभ्य वर्तन के सामने भी, सीदी ने अपने गुरु के कहे अनुसार नम्रता रखी और अंत में वह वृद्ध भी गुरु की शरण में आ गया। कोई भी इंसान हमारे साथ कैसा भी खराब व्यवहार करे या अकड़ दिखाए लेकिन यदि हम नम्र रहेंगे, तो अंत में जीत अपनी ही होगी!

ब्राज़िल और दुबई के बच्चों के साथ पूज्यश्री...

Akram Express

August 2016
Year : 4, Issue : 5
Conti. Issue No.: 41

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published